Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः ईदुल-अज़हियः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 21.10.16 स्थान कैनेडा।

जमाअत के दो पुराने सेवक मुकर्रम बशीर अहमद रफ़ीक़ ख़ान साहब मुबल्लिग़-ए-सिलसिला तथा डाक्टर नुसरत जहाँ साहिबा गायनालोजिस्ट (स्त्री रोग विशेषज्ञ) फ़ज़्ल-ए-उमर हस्पताल रबवा के विशेष गुणों का सद्वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज मैं जमाअत के दो ख़ादिमों का वर्णन करुंगा जिनका पिछले दिनों निधन हुआ है जिनमें से एक मुकर्रम बशीर अहमद रफ़ीक़ ख़ान साहब हैं तथा दूसरी फ़ज़्ल-ए-उमर हस्पताल की गायना विभाग की डाक्टर नुसरत जहाँ साहिबा हैं। जो इंसान भी दुनया में आया है उसे एक दिन यहाँ से जाना है परन्तु भाग्य शाली होते हैं वे जिनको अल्लाह तआला दीन की सेवा करने का भी सामर्थ्य प्रदान करे तथा मानव सेवा की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। बशीर अहमद रफ़ीक़ ख़ान साहब पुराने ख़ादिम-ए-सिलसिला एंव सिलसिले के मुबल्लिग़ थे। फिर विभिन्न प्रबन्धकीय कार्यों पर भी उनको नियुक्त किया गया। बड़ी कुशलता पूर्वक अपने काम पूरे करते रहे। उनका 11 अक्तूबर 2016 को लगभग 85 वर्ष की आयु में लंदन में निधन हुआ। इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। उन्होंने पंजाब युनीवर्सिटी से बी ए किया फिर शाहिद की डिग्री जामिअतुल मुबश्शिरीन से 1958 ई. में प्राप्त की। उनकी माता का नाम फ़ातिमा बी बी था जो हज़रत मौलवी मुहम्मद इलयास ख़ान साहिब, सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी बेटी थीं। उनके पिता का नाम दानिश मंद ख़ान था, वे 1890 के आस पास पैदा हुए तथा स्वप्न एंव कश्फ़ से सुशोभित व्यक्ति थे। बशीर रफ़ीक़ ख़ान साहब जन्म से अहमदी थे। आपके पिता जी ने 1921 ई. में अहमदियत क़बूल की थी जिसके कारण गाँव वालों ने उनका बहिष्कार भी कर दिया। अल्लाह तआला उनपर अपनी विशेष कृपा करे तथा उनकी समस्त संतान को उनका वास्तविक उत्तराधिकारी बनाए। उनकी शादी 1956 ई. में हुई। उनकी संतान में तीन बेटे तथा तीन बेटियाँ हैं। 1945 में ख़ान साहब तअलीमुल इस्लाम स्कूल क़ादियान में दाख़िल हुए और उस समय उनकी आयु चौदह वर्ष थी। उन्हीं दिनों एक ख़ुत्बः में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने अहमदियत के युवाओं को जीवन वक़्फ़ करने की प्रेरणा दी। अतः नमाज़ पूरी होते ही कई युवाओं ने अपने नाम परस्तुत किए तथा उन भाग्य शाली युवाओं में ये भी शामिल थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के आदेश पर बी ए किया। इसके पश्चात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि जामिअः में दाख़िल हो जाओ और शाहिद की डिग्री प्राप्त करो, मेरी इच्छा है कि तुम्हें तबलीग़ के क्षेत्र में भिजवाया जाए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने विशेष रूप से ध्यान दिलाया कि प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी लाईब्रेरी बनानी चाहिए तथा पुस्तकें ख़रीदने की आदत डालनी चाहिए और यह बात ऐसी है जो प्रत्येक जामिअः के विद्यार्थी को सदैव याद रखनी चाहिए। अब विश्व में असंख्य जामिअः हैं, वाक़िफ़-ए-ज़िन्दगी हैं, उनको अपनी लाईब्रेरियाँ बनानी चाहिएँ। पिछले दिनों मुरब्बियों की मीटिंग थी लंदन में, वहाँ भी मैंने उनको कहा था कि मुरब्बियों की अपनी लाईब्रेरियाँ भी होनी चाहिएँ, केवल जमाअत की लाईब्रेरी पर संतुष्ट न हों। कहते हैं- जामिअतुल मुबश्शिरीन से शाहिद की डिग्री लेकर मैं वकालत-ए-तबशीर में उपस्थित हो गया। मुकर्रम मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहब वकीलुत्तबशीर थे। मुझे ख़लीफ़तुल मसीह सानी

के पास ले गए तो आपने फ़रमाया कि इसको इंगलिस्तान भिजवा दिया जाए। फिर कहते हैं- इंगलिस्तान जाने के लिए भी वकीलुत्तबशीर मुझे अपने साथ ले गए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी से भेंट हुई तथा विस्तार पूर्वक निर्देश लिखवाए, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने, दुआएँ दीं, विदा किया, गले लगाया और इंगलिस्तान 1959 में आपकी नियुक्ति हुई, वहाँ पहुंच गए और मस्जिद फ़ज़्ल लंदन में नायब इमाम के रूप में सेवाएँ करने का क्रम आरम्भ हुआ।

1964 में मुकर्रम चौधरी रहमत ख़ान साहब जो वहाँ लंदन की मस्जिद के इमाम थे, उनकी बीमारी के कारण वापस गए तो उनको मस्जिद फ़ज़्ल का इमाम नियुक्त कर दिया गया। 1960 में बशीर रफ़ीक़ साहब ने अंग्रेज़ी पत्रिका मुस्लिम हैराल्ड भी जारी किया तथा प्रारम्भ में यह दस पृष्ठों पर आधारित था, संम्पादक भी स्वयं ही थे तथा अन्य कार्य भी स्वंय ही करते थे। 1962 ई. में हज़रत सहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब की प्रेरणा पर अख़बार अहमदिय्यः के नाम से पन्द्रह रोज़ा समाचार पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा जारी किए हुए रिव्यू ऑफ़ रिलीजंस के सम्पादन का भी इन्हें श्रेय प्राप्त हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने 1967 से लेकर अपने ख़िलाफ़त के दौर तक यूरोप के आठ दौरे किए। इनमें से सात दौरों में मौलाना बशीर अहमद रफ़ीक़ साहब, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के क़ाफिले में शामिल रहे। दो बार, दो दौरों में प्राईवेट सैक्रेट्री के रूप में भी शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। 1970 में वापस पाकिस्तान आए तथा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के प्राईवेट सैक्रेट्री के रूप में नियुक्ति हुई। 1971 में फिर लंदन वापस आए तथा इमाम के रूप में अपने पिछले दायित्वों को पुनः संभाला। 1976 में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के साथ प्राईवेट सैक्रेट्री के रूप में अमरीका और कैनेडा के दौरे पर जाने का भी इनको सौभाग्य प्राप्त हुआ। 1978 में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस, मई 1978 में जो अंतर्राष्ट्रीय कम्र-ए-सलीब कान्फ्रंस (सलीब का टूटना) लंदन में हुई थी उसमें शामिल होने के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस तशरीफ़ लाए थे और उसके प्रबन्ध को सम्पूर्ण रूप देने के लिए बर्तानिया की जमाअत के लोग, मज्लिस आमला इंगलिस्तान तथा कानफ्रंस कमैटी ने दिन रात एक करके काम किया और टीम वर्क का उत्तम नमूना दिखाया। 1964 से 1970 तक तथा फिर 71 से 79 तक लंदन की मस्जिद के इमाम रहे। मुस्लिम हैराल्ड पत्रिका संस्थापक सम्पादक 61 से 79 तक, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के प्राईवेट सैक्रेट्री 70 से 71 तक फिर नवम्बर 85 में आप वकीलुद्दीवान तहरीक-ए-जदीद नियुक्त हुए तथा 87 तक रहे। वकीलुत्तसनीफ़ रबवा 82 से 85 तक, एडीशनल वकीलुत्तबशीर रबवा 83 से 84 तक, एडीशनल वकीलुत्तसनीफ़ लंदन 1987 से 1997 तक, रिव्यू ऑफ़ रिलीजंस के सम्पादक 1983 से 1985 तक, रिव्यू ऑफ़ रिलीजंस बोर्ड ऑफ़ एडीटर्स के चैयर मैन 1988 से 1995 तक, मेम्बर सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान 1971 से 1985 तक, मेम्बर इफ़ता कमैटी 1971 से 1973 तक, मेम्बर बोर्ड ऑफ़ कज़ा 1984 से 1987 तक तथा इसी प्रकार अन्य सांसारिक पद भी थे जिनपर काम करने का भी इनको सामर्थ्य प्राप्त हुआ। रोट्री कलब के मेम्बर और वाईस प्रेज़िडैन्ट थे फिर प्रेज़िडैन्ट रोट्री कलब भी नियुक्त हुए। 1968 में लाईबेरिया के सदर जनाब टिब मैन के आमन्त्रण पर विशेष अतिथि के रूप में इन्हें बुलाया गया तथा लाईबेरिया के चीफ़ की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इनके बेटे लिखते हैं कि नियम पूर्वक तहज्जुद अदा किया करते तथा बड़े अनिवार्य रूप से दुआ किया करते थे। यहाँ तक कि नाम लिख कर दुआ करते कि किसी का नाम भूल न जाएँ। अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत और रहम का सलूक फ़रमाए तथा इनके दर्जे बुलन्द करे और इनकी संतान को भी श्रद्धा एंव निष्ठा से जमाअत के साथ सम्बंध रखने और उनके पद्चिन्हों पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा वर्णन मोहतरमा डाक्टर नुसरत जहाँ मालिक साहिबा का है जो हज़रत मौलान अब्दुल मालिक ख़ान साहब की बेटी थीं। 11 अक्तूबर 2016 को लंदन में निधन हो गया। इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

इनका जन्म 15 अक्तूबर 1951 का है, कराची में जन्म हुआ। डाक्टर नुसरत जहाँ साहिबा के पिता मोहतरम मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान साहब भी सिलसिले के पुराने सेवक थे। हज़रत ख़ान जुलफ़क़्क़ार ख़ान साहब के बेटे थे। इनके पूर्वजों की जन्मभूमि नजीबाबाद ज़िला बिजनौर थी, जो यू.पी. में स्थित है। डाक्टर नुसरत जहाँ के दादा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत 1900 ई. में पत्र के द्वारा की और फिर 1903 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में

उपस्थित होकर मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़्क़ार ख़ान साहब गौहर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छानुसार कि अपने बेटे को दीन के लिए वक़्फ़ करना, मौलान अब्दुल मालिक ख़ान साहब को बचपन में ही वक़्फ़ कर दिया था, यद्यपि इनका जन्म बाद में हुआ। डाक्टर नुसरत जहाँ साहिबा ने पहले एम बी बी एस पाकिस्तान से किया फिर स्पेशलाईज़ किया यू.के. से। अन्य किसी भी सेवा में वे जातीं तो लाखों रुपए रोज़ कमा सकती थीं परन्तु दीन की सेवा के लिए, मानवता की सेवा के लिए छोटे से नगर रबवा में आकर आबाद हो गईं और हस्पताल को उस समय आवश्यकता भी थी। इस आवश्यकता को पूरा किया और फिर पूरी आयु निःस्वार्थ होकर ऐसी सेवा की जो उच्चतम स्तर तक पहुंची हुई थी। 1985 ई. में फ़ज़्ल-ए-उमर हस्पताल से अपनी सेवाओं का शुभारम्भ किया और 20 अप्रैल 1985 से अब तक यह सेवा करती रहीं। अपने इलाज के लिए छुट्टी लेकर 5 अप्रैल को आई थीं लंदन, इलाज हो रहा था और इलाज अल्लाह की कृपा से सफल हो गया था फिर उनको चैस्ट इन्फ़ैक्शन हुआ जलसे के बाद, इससे भी कुछ हद तक लग रहा था कि वापसी है परन्तु फिर अचानक बीमारी का हमला हुआ और निधन हो गया।

उनके दामाद मक़बूल मुबश्शिर साहब कहते हैं- ख़ुदा पर अत्यधिक भरोसा था, इबादत का शौक़ था, क़ुरआन से मुहब्बत थी, ख़िलाफ़त से गहरा लगाव था। पूरी तरह निष्ठा पूर्वक ख़िलाफ़त का आज्ञा पालन, मानव सेवा, रोगी को बीमार से मुक्ति तथा आराम उनकी प्राथमिकताएँ थीं और ये जो बातें, जो ये बयान कर रहे हैं, मैं व्यक्तिगत रूप से भी गवाह हूँ। यह कोई अतिश्योक्ति नहीं है अपितु वास्तव में ये बातें हैं जो उनमें थीं। प्रत्येक सर्जरी से पहले तथा इलाज से पहले दुआएँ करतीं, रोज़ाना सदक़ा देतीं। रबवा में मौजूद बुज़ुर्गों को अपने रोगियों के स्वास्थय के लिए कहतीं। बहुत से ग़रीब रोगियों का अपनी जेब से अथवा निकट के दोस्तों से इलाज करातीं। जमाअत के पैसों का भी बहुत दर्द रखतीं थीं, हर समय प्रयास करतीं कि कम से कम ख़र्च हो, जमाअत का एक रुपया भी व्यर्थ न जाए।

डाक्टर नुसरत मजोका साहिबा हैं फ़ज़्ल-ए-उमर हस्पताल में, कहती हैं- डाक्टर नुसरत साहिबा के साथ मेरा अट्ठारह साल से सम्बंध था और मैं हाऊस जॉब करते ही स्त्री रोग के विभाग, फ़ज़्ल-ए-उमर हस्पताल के विभाग का अंश बन गई। मेरी पूरी प्रोफ़ैशनल ट्रेनिंग डाक्टर साहिबा ने की। वह एक योग्य अध्यापक थीं, हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनसे मार्ग दर्शन मिलता है। दृढ़ संकल्प एंव सम्पूर्ण थीं, ख़ुदा तआला ने उनको विशिष्ट क्षमताएँ प्रदान की थीं। वे एक आज्ञा पालक तथा एक हमदर्द बेटी भी थीं और एक स्नेह करने वाली माँ भी। एक अनुशासन वाली अध्यापिका भी थीं तथा दुःख बाँटने वाली बहिन भी और दोस्त भी। कहती हैं कि उनका पूरा जीवन बलिदान का रूप है, उन्होंने जमाअत की सेवा के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन को बहुत पीछे छोड़ दिया।

डाक्टर नूरी साहब कहते हैं कि पिछले नौ वर्षों से अधिक समय से मोहतरमा डाक्टर नुसरत साहिबा के साथ फ़ज़्ल-ए-उमर हस्पताल के ज़ुबैदा वानी विंग और ताहिर हार्ट इंस्टीटयूट में काम करने का अवसर मिला। कई ऐसे गुण थे उनमें जो आजकल बहुत कम डाक्टरों में पाए जाते हैं। बहुत ही नेक, दुआ करने वाली, उच्च आचरण की मालिक, ख़ुदा तआला का भय रखने वाली, अपने रोगियों के लिए दुआएँ करने वाली, पर्दे की सूक्षमता से पाबन्दी करने वाली, क़ुरआन-ए-करीम का व्यापक ज्ञान रखने वाली, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मार्ग पर चलने वाली महिला थीं। अपने कार्य में दक्ष थीं, आधुनिक टैनिकल ज्ञान से परिचित थीं और अपने ज्ञान को नई आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ाकर काम करती थीं। कभी अपने काम के लिए समय की चिंता नहीं की तथा प्राप्त सुविधाओं का अनुचित प्रयोग नहीं किया। भयावह स्थिति से ग्रस्त रोगियों के लिए अपनी छुट्टियों का बलिदान देकर बारह बारह घन्टे काम करती रहतीं। ग़ैर अहमदी रोगी भी इनके पास बहुत आते थे। एक बार उन्होंने स्वयं सुनाया कि चिनयोट के ग़ैर अहमदी मौलवी साहब आ गए उनकी बीवी को संतान नहीं होती थी तो उनके इलाज से अल्लाह तआला ने कृपा की और उम्मीद हो गई तो कहती हैं- अब यह मौलवी साहब नौ महीने तो मेरे क़ाबू में हैं और उनको ख़ूब तबलीग़ की।

मुबश्शिर अयाज़ साहब हैं, हमारे जामिअः रबवा के प्रधान अध्यापक, उनकी सतर्कता और पर्दे के विषय में लिखते हैं कि हमारी यह डाक्टर साहिबा भी बुर्क़े से ढकी, उचित पर्दे की उत्तम अवस्था को धारण किए हुए वे सेना के जवानों की भांति

भाग दौड़ करती नज़र आती थीं। जो महिलाएँ पर्दे को रोक समझती हैं उनके लिए यह उच्चतम रोल माडल थीं। एक उनकी स्टाफ़ नर्स साहिबा लिखती हैं कि बड़ा खेद है डाक्टर साहिबा के निधन का। डाक्टर साहिबा एक बड़ी अच्छी एंव प्रसन्न चित डाक्टर थीं। हम सबका अत्यधिक ध्यान रखने वाली डाक्टर थीं, बच्चों की भांति हमसे प्यार करती थीं और बड़ा ध्यान रखती थीं, जो भी निर्धन रोगी आता उसको पर्ची के पैसे भी वापस कर देतीं और दवाई भी अपने पास से देतीं।

फिर उनकी एक रोगी लिखती हैं कि एक बार मेरा इलाज कर रही थीं तथा वाक़िफ़-ए-जिन्दगी की बीवी होने के कारण बड़ा ध्यान रखती थीं। अल्ट्रा साउंड कराना था तो अपनी सहायक सेविका को कहा कि इनका अल्ट्रा साउंड करा लाओ, उस समय बड़ी भीड़ थी। एक कुर्सी थी वहाँ जिस पर एक निर्धन सी महिला बैठी हुई थी तो उस महिला ने जो असिस्टैंट सहायक थी, उसने उस महिला को उठा कर, क्यूँकि डाक्टर साहिबा ने भेजा था, उस रोगी स्त्री को उस पर बैठाना चाहा तो देखा कि सहसा पीछे से आवाज़ आई कि नहीं, तुम उस कुर्सी पर नहीं उस पर बैठो। देखा तो डाक्टर साहिबा स्वयं एक कुर्सी उठाकर ला रही थीं ताकि जो दूसरी निर्धन रोगी है उसको यह आभास न हो कि मुझे उठाया गया है। क्यूँकि रोगी सभी एक जैसे होते हैं परन्तु दूसरी तरफ़ इसकी दशा देखकर यह भी था कि बैठने की जगह मिल जाए। इस लिए स्वयं ही कुर्सी उठाकर ले आईं और अपनी रोगी को इस पर बैठा दिया।

आपकी बेटी नुदरत आयशा साहिबा बयान करती हैं कि मेरी अम्मी एक माँ का सम्पूर्ण उदाहरण तथा बड़ा प्रेम करने वाला अस्तित्व थीं। मेरे और मेरे बच्चों के लिए अत्यधिक दुआएँ किया करती थीं। जब कोई कठिनाई आती तो तुरन्त अम्मी को फ़ोन कर देती और निश्चिंत हो जाती और अल्लाह के फ़ज़्ल से बाद में वह कार्य सरल भी हो जाता। फिर मुझे कहतीं कि तुम शुक्र का सजदा करो। अत्यंत व्यस्त होने के बावजूद मेरी तर्बियत तथा देख रेख में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतनी दृढ़ साहसी थीं कि मुझे माँ और बाप दोनों बनकर पाला। कभी आभास होता और कहतीं, यदि उनको आभास होता कि उचित रूप से सेवा नहीं कर सकी बेटी की, तो कहतीं कि मैं अपनी बेटी को व्यस्तता के कारण इतना समय नहीं दे सकती परन्तु फिर तुरन्त कहतीं कि जो समय मानवता की सेवा में लगा उसका महत्त्व अत्यधिक है, अल्लाह तआला मेरी संतान के काम स्वयं पूरे करेगा। सदैव मुझे कहा करती थीं कि तुम्हारे नाना जान ने दो चीज़ें अपनी संतान को नसीहत फ़रमाई थीं। एक अल्लाह पर पूरा भरोसा, दूसरा ख़िलाफ़त से सम्बंध और वही नसीहत मैं तुम्हें करती हूँ कि सदैव अल्लाह पर भरोसा रखना तथा ख़िलाफ़त से स्वयं को तथा अपनी संतान को जोड़े रखना। एक बार कहती हैं- मेरी बेटी आलिया पन्द्रह दिनों के लिए रबवा आई हुई थी, उसे भी अपने विभाग के काम में लगाया कि टाईपिंग में सहायता करो, क्यूँकि तुम्हारी टाईपिंग स्पीड अच्छी है और जमाअत की सेवा करना एक सौभाग्य की बात है तथा तुम इस सौभाग्य से लाभान्वित हो जाओ। अपने काम की ऐसी धुन थी कि बीमारी के अन्तिम समय में भी हस्पताल का नाम सुनकर उनके चेहरे पर मुस्कुराहट आती तथा मूर्छता की अवस्था में भी हस्पताल के आप्रेशन थेटर तथा मशीन बनाने वाली कम्पनियों के नाम लेतीं जिसे सुनकर अंग्रेज़ नर्सें भी चकित होतीं और मुझसे पूछने लगतीं कि ये क्या कह रही हैं। अल्लाह की ज़ात पर अत्यधिक भरोसा था, सम्भवतः बीमारी की हालत में कुछ दिन तक बात नहीं कर सकती थीं। जब बोलने वाला यन्त्र लगाया गया, जो पहला वाक्य अम्मी ने बोला वह यह था कि मेरी बेटी अल्लाह पर छोड़ दो और यदि मैं रोने लगती तो आँख के इशारे से अल्लाह की ओर इशारा करतीं।

अल्लाह तआला उनकी इस इकलौती बेटी को भी धैर्य एंव साहस अता फ़रमाए और जो उसकी माँ ने उसे उपदेश दिए हैं तथा उससे आशाएँ बांधी हैं, अल्लाह तआला उसे उन पर पूरा उतरने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह तआला इस बच्ची को सदैव अपनी सुरक्षा में रक्खे तथा उसकी संतान को भी। मरहूमा के भी दर्जे बुलन्द फ़रमाए और अल्लाह तआला फ़ज़्ल-ए-उमर हस्पताल को सेवा करने वाली तथा निष्ठा पूर्वक अपने काम को पूरा करने वाली, प्रतिज्ञा पालन के साथ जमाअत से जुड़ी रहने वाली तथा ख़िलाफ़त की आज्ञा पालक और अधिक डाक्टर भी अता फ़रमाता रहे और जो मौजूद हैं, उनको अल्लाह तआला इस काम में बढ़ाता चला जाए।